चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार,
1से 15जुलाई 2025 तक बाजरा की खेती के लिए सुझाव।

'A+'
NAEAB – ICAR
Accredited

खेत की तैयारी एवम बुवाई

- जुलाई का पहला आधा पखवाड़ा इसकी बिजाई का उचित समय है। गर्मी के दिनों में 1 से 2 जुताई तथा 3 से 4 वर्षो में एक बार गहरी जुताई जरूर करनी चाहिए जोकि बीमारी रोकने तथा नमी संरक्षण के लिए बहुत ही आवश्यक है।
- बुवाई के लिए हमेशा विश्वसनीय स्रोतों से प्रमाणित बीज का उपयोग करें। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित संकर किस्में जैसे अर्धसिंचित क्षेत्रों के लिए एच.एच.बी. 299 और बारानी क्षेत्रों के लिए एच.एच.बी. 67 (संशोधित) बुवाई के लिए अनुमोदित है। इसके अलावा सार्वजनिक क्षेत्र की बीज कंपनियों (राष्ट्रीय बीज निगम और हरियाणा बीज विकास निगम) या अच्छी निजी कंपनियों का भी बीज उपयोग किया जा सकता है।
- उचित मात्रा में सिफारिश के अनुसार प्रमाणित एवं उपचारित बीज (1.5 से 2 कि.ग्रा. प्रति एकड़) का प्रयोग करना चाहिए ताकि 60 से 65 हजार पौधे प्रति एकड़ बारानी अवस्था में तथा 75 से 80 हजार पौधे सिंचित अवस्था में प्राप्त हो सके।
- यदि बीज पहले से उपचारित न हो तो डाऊनी मिल्ड्यू (जोगिया या हरी बालों वाला रोग) की शुरुआती रोकथाम के लिए बीज को मैटालेक्सिल 6 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित कर देना चाहिए।
- बिजाई लाइनों में करनी चाहिए तथा लाईन से लाईन का फासला 45 सै.मी. रख कर इस प्रकार करें कि बीज 2.0 सै.मी. गहराई पर पड़े। पौधे से पौधे की दूरी 10 से 12 सै.मी. रहे।
- कुरंड होने से बचने के लिए रिजर सीड ड्रिल का बिजाई के लिए प्रयोग करना चाहिए।

सस्य क्रियाएँ

- अगर मजदूरों या घर के आदमियों की कमी है तो खरपतवार नाशक एट्राजिन (50 प्रतिशत घु.प.) 400 ग्राम प्रति एकड़ 250 लीटर पानी में मिलाकर बिजाई के समय छिड़के। यदि बिजाई के तुरन्त बाद एट्राजीन का प्रयोग न कर सकें तो बिजाई के बाद 10 से 15 दिन के बीच में भी उतनी ही मात्रा प्रयोग कर सकते हैं।
- बिजाई के तीन सप्ताह बाद विरलन करना तथा जहां कम पौधे हैं वहां पर खाली जगह भरना चाहिए। वर्षा वाले दिन यह काम अति उचित है ताकि एक एकड़ में उचित संख्या में पौधे प्राप्त हो सकें।

- बिजाई के 3 और 5 सप्ताह बाद निराई व गुडाई आवश्यक है जो कि खरपतवार नियंत्रण तो करती ही है तथा नमी संरक्षण के लिए भी बहुत उचित उपाय है तथा पौधों की जड़ो तक उचित मात्रा में हवा का भी आवागमन हो जाता है।

उर्वरक

- उर्वरक की मात्रा मिट्टी परिक्षण के आधार पर प्रयोग करें। बिजाई के समय आधी नत्रजन तथा पूरी फास्फोरस (16 कि.ग्रा. नत्रजन + 8 कि.ग्रा. फास्फोरस प्रति एकड़ बारानी क्षेत्रों में तथा 24 कि०ग्रा० नत्रजन + 25 कि०ग्रा० फास्फोरस प्रति एकड़ सिंचित क्षेत्रों में) अवश्य डाले। बाकी नाइट्रोजन को दो बार बराबर मात्रा में (18 + 18 किलोग्राम) पौधों की छंटाई के बाद व सिट्टे निकलते समय डालें। बाजरा के सिंचित क्षेत्रों में सिफारिश की गई नत्रजन व फास्फोरस की मात्रा के साथ निमन दर्जे वाली भूमि में 12.0 कि०ग्रा० पोटाश प्रति एकड़ (20.0 कि.ग्रा. MOP प्रति एकड़) अवश्य डाले। अगर गेहू / सरसों की फसल में जिंक नहीं डाला है तो 10.0 कि. ग्रा. जिंक सल्फेट प्रति एकड़ का प्रयोग अधिक पैदावार के लिए करें।

अधिक जानकारी के लिए निम्लिखित नंबरों पर संपर्क करें

9053068378-अनुभाग अध्यक्ष 9053068408-कीट वैज्ञानिक 8295100390-रोग वैज्ञानिक

बजरा अनुभाग, आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग
अनुसंधान निदेशालय, चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार